

जिनवाणी: युवा विशेषांक

विषय: भगवान महावीर - केवलज्ञान प्राप्ति और जैन शासन स्थापना

(15 से 20 वर्ष के युवाओं के लिए)

इस अंक में:

- अध्याय 1: प्रकाश का पथ: केवलज्ञान और शासन स्थापना
- अध्याय 2: जीवन जीने की कला: प्रसंगों से प्रेरणा
- अध्याय 3: महावीर का संदेश: अमूल्य बोध
- अध्याय 4: हममें धर्म: शासन को जीवंत रखें
- अध्याय 5: भविष्य की दिशा: नई पीढ़ी और जैन धर्म

अध्याय 1: प्रकाश का पथ: केवलज्ञान और शासन स्थापना

भगवान महावीर, जिनका बचपन का नाम वर्धमान था, ने 30 वर्ष की युवा आयु में सत्य की खोज और आत्म-कल्याण के लिए राजपाट और संसार का त्याग कर दिया। उन्होंने बारह वर्ष से अधिक समय कठोर तपस्या और ध्यान में बिताया।

केवलज्ञान प्राप्ति:

- स्थान: जृम्भिक गाँव के बाहर, ऋजुपालिका नदी के किनारे।
- समय: वैशाख शुक्ल दशमी का पवित्र दिन।
- वृक्ष: साल वृक्ष के नीचे।
- ध्यान: गोदुहासन (गाय दुहने की मुद्रा) में प्रभु ध्यान में लीन थे।
- घटना: लगभग साढ़े बारह वर्ष की कठोर साधना के अंत में, भगवान महावीर की आत्मा पर रहे चार घातिया कर्म (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अंतराय) पूरी तरह से नष्ट हो गए।
- परिणाम: उन्हें 'केवलज्ञान' यानी संपूर्ण, अनंत ज्ञान और 'केवलदर्शन' यानी संपूर्ण, अनंत दर्शन की प्राप्ति हुई। वे सर्वज्ञ और सर्वदर्शी बन गए। अब उनके लिए भूतकाल, वर्तमान और भविष्य का कुछ भी अज्ञात नहीं रहा।

जैन शासन (तीर्थ) की स्थापना:

- केवलज्ञान पाने के बाद, भगवान महावीर 'तीर्थंकर' कहलाए।
- उन्होंने अपना पहला उपदेश (देशना) वैशाख शुक्ल एकादशी के दिन पावापुरी नगरी में (महासेन उद्यान में) दिया। यह दिन 'वीर शासन स्थापना दिवस' के रूप में भी जाना जाता है।
- इस प्रथम उपदेश को सुनकर इंद्रभूति गौतम सहित 11 गणधरों ने दीक्षा ग्रहण की।
- भगवान महावीर ने चार मुख्य स्तंभों पर आधारित 'तीर्थ' या 'जैन संघ' की स्थापना की:
 1. साधु: जो संसार का त्याग कर, कठोर व्रतों का पालन करते हैं।
 2. साध्वी: वे स्त्रियाँ जो संसार का त्याग कर, व्रतों का पालन करती हैं।
 3. श्रावक: गृहस्थ पुरुष जो जैन धर्म के सिद्धांतों का पालन करते हैं।
 4. श्राविका: गृहस्थ स्त्रियाँ जो जैन धर्म के सिद्धांतों का पालन करती हैं।

- यह 'चतुर्विध संघ' ही जैन शासन का आधार है, जो आज भी विद्यमान है।

अध्याय 2: जीवन जीने की कला: प्रसंगों से प्रेरणा

भगवान महावीर के केवलज्ञान और शासन स्थापना के प्रसंग हमें जीवन जीने के लिए अमूल्य प्रेरणा देते हैं।

- **लक्ष्य निष्ठा:** भगवान महावीर ने सत्य की खोज के लिए राजमहल के सुखों को छोड़ दिया। यह सिखाता है कि जीवन में ऊँचे लक्ष्य के लिए समर्पित होना चाहिए।
 - उदाहरण: आपको परीक्षा में अच्छे अंक लाने हों या कोई प्रतियोगिता जीतनी हो, तो उसके लिए पूरी लगन से मेहनत करनी पड़ती है, जैसे भगवान ने तप किया।
- **सहनशीलता:** साढ़े बारह वर्ष की साधना के दौरान भगवान ने असंख्य कष्ट और उपसर्ग (पीड़ाएँ) सहे, लेकिन वे अपने मार्ग पर अडिग रहे।
 - उदाहरण: जीवन में असफलता मिले, कोई आलोचना करे, या मुश्किल आए, तब हिम्मत हारे बिना, शांति से उसका सामना करना ही सच्ची वीरता है।
- **आत्मविश्वास:** भगवान ने किसी बाहरी शक्ति पर निर्भर रहे बिना, अपने पुरुषार्थ से ही केवलज्ञान प्राप्त किया।
 - उदाहरण: हमें अपनी क्षमताओं में विश्वास रखकर, मेहनत से आगे बढ़ना चाहिए, किसी के सहारे बैठे नहीं रहना चाहिए।
- **करुणा:** केवलज्ञान पाने के बाद, उन्होंने अपना ज्ञान केवल अपने लिए न रखकर, जगत के कल्याण के लिए उपदेश दिया।
 - उदाहरण: हमारे पास जो अच्छा ज्ञान या हुनर हो, उसे दूसरों की मदद करने के लिए उपयोग करना चाहिए।
- **समता:** भगवान महावीर ने सुख-दुःख, मान-अपमान, निंदा-स्तुति सबमें समभाव रखा।
 - उदाहरण: परीक्षा में अच्छे अंक आने पर बहुत अभिमान न करना और कम आने पर निराश न होना, बल्कि संतुलन बनाए रखना।

अध्याय 3: महावीर का संदेश: अमूल्य बोध

केवलज्ञान पाने के बाद भगवान ने जो उपदेश दिया, वह हमारे जीवन के लिए मार्गदर्शक है। मुख्य सिद्धांत:

- **पंच महाव्रत (साधु-साध्वी के लिए) और पंच अणुव्रत (श्रावक-श्राविका के लिए):**
 1. **अहिंसा:** मन, वचन, काया से किसी भी जीव को दुःख न पहुँचाना।
 - हमारे लिए: किसी का मज़ाक न उड़ाना, झूठ न बोलना, जीव-जंतुओं की रक्षा करना, शाकाहारी रहना।
 2. **सत्य:** हमेशा सच बोलना। हितकारी, मितकारी और प्रिय वचन बोलना।
 - हमारे लिए: परीक्षा में चोरी न करना, माता-पिता या मित्रों से बात न छिपाना।
 3. **अस्तेय (अचौर्य):** किसी की मालिकी की वस्तु उसकी अनुमति के बिना न लेना।
 - हमारे लिए: मित्र की कलम बिना पूछे न लेना, किसी के विचारों की नकल न करना।
 4. **ब्रह्मचर्य:** इंद्रियों पर संयम रखना। (श्रावकों के लिए स्व-स्त्री/पति संतोष)।
 - हमारे लिए: बुरे विचारों से दूर रहना, पढ़ाई और अच्छे कामों में मन लगाना।
 5. **अपरिग्रह:** आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करना, ममत्व भाव न रखना।
 - हमारे लिए: कपड़े, गैजेट्स आदि का अनावश्यक संग्रह टालना, वस्तुओं के प्रति आसक्ति कम करना।

- **अनेकान्तवाद:** सत्य को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखना। किसी भी वस्तु के बारे में एक ही विचार सही है, ऐसा आग्रह न रखना।
 - उदाहरण: 'हाथी और सात अंधे व्यक्ति' की कहानी। प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुभव के अनुसार हाथी का वर्णन करता है, जो आंशिक रूप से सत्य है। वैसे ही, किसी भी मुद्दे पर दूसरों की राय को भी समझने का प्रयास करना।
- **स्याद्वाद:** वाणी का विवेक। कोई भी निर्णय या कथन करने से पहले 'शायद' (स्यात्) शब्द का प्रयोग करना, जो अनेकान्तवाद को वाणी में उतारता है।
- **कर्म सिद्धांत:** हम जैसे कर्म करते हैं, वैसा ही फल मिलता है। अच्छे कर्मों से सुख और बुरे कर्मों से दुःख मिलता है। हम ही अपने भाग्य के निर्माता हैं।

अध्याय 4: हममें धर्म: शासन को जीवंत रखें

भगवान महावीर द्वारा स्थापित शासन केवल साधु-साधवियों के लिए नहीं है, यह हम जैसे युवाओं और गृहस्थों के जीवन में भी जीवंत रहे, यह आवश्यक है। कैसे?

- **ज्ञान (Knowledge):**
 - जैन धर्म के सिद्धांतों, कहानियों, इतिहास को जानने का प्रयास करना।
 - धार्मिक पुस्तकें पढ़ना, प्रवचन सुनना, शिविरों में भाग लेना।
 - **प्राैक्टिकल:** प्रतिदिन थोड़ा समय धर्म ग्रंथ पढ़ने के लिए निकालें, ऑनलाइन अच्छे स्रोतों का उपयोग करें।
- **दर्शन (Faith):**
 - जैन धर्म के सिद्धांतों में सच्ची श्रद्धा रखना। देव, गुरु, धर्म पर विश्वास रखना।
 - शंका हो तो जानकार से समाधान प्राप्त करना।
 - **प्राैक्टिकल:** नियमित रूप से मंदिर (देरासर) जाना, गुरु भगवंतों के दर्शन करना।
- **चारित्र (Conduct):**
 - जाने हुए सिद्धांतों को जीवन में उतारने का प्रयास करना।
 - पंच अणुव्रतों का यथाशक्ति पालन करना।
 - सामायिक, प्रतिक्रमण जैसी क्रियाएँ करना।
 - **प्राैक्टिकल:** गुस्सा कम करना, भोजन में विवेक रखना (रात्रि भोजन त्याग, कंदमूल त्याग), जरूरतमंदों की मदद करना (जीवदया, मानवसेवा)।
- **तप (Austerity):**
 - इच्छाओं पर नियंत्रण रखना।
 - उपवास, एकासन, आयंबिल जैसी तपस्या शक्ति अनुसार करना।
 - **प्राैक्टिकल:** मनपसंद वस्तु का कुछ समय के लिए त्याग करना (जैसे चॉकलेट, मोबाइल गेम्स), इंद्रियों पर काबू रखना।
- **वीर्य (Energy):**
 - धर्म पालन में उत्साह रखना, आलस्य न करना।
 - अच्छे कार्यों में अपनी शक्ति का उपयोग करना।

अध्याय 5: भविष्य की दिशा: नई पीढ़ी और जैन धर्म

जैन शासन को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी हम सबकी है, खासकर युवाओं की। इसके

लिए हम क्या कर सकते हैं?

- स्वयं समझें और पालन करें: पहले हम स्वयं धर्म को ठीक से समझें और उसे जीवन में उतारें। हमारा आचरण ही दूसरों के लिए प्रेरणा बनेगा।
- सरल प्रस्तुति: धर्म के सिद्धांतों को आज के युग के अनुरूप, सरल और तार्किक भाषा में समझाने का प्रयास करना।
- टेक्नोलॉजी का सदुपयोग: मोबाइल ऐप्स, वेबसाइट्स, सोशल मीडिया का उपयोग करके जैन धर्म की सही जानकारी और मूल्यों का प्रचार करना।
 - उदाहरण: अच्छे धार्मिक वीडियो शेयर करना, जैन प्रश्नोत्तरी बनाना, ऑनलाइन स्टडी ग्रुप शुरू करना।
- चर्चा और संवाद: मित्रों, परिवार के साथ धर्म के बारे में खुले मन से चर्चा करना। प्रश्न पूछना और उनके उत्तर खोजना।
- प्रेरणादायक बनें: पढ़ाई, खेलकूद, कला जैसे क्षेत्रों में आगे बढ़ने के साथ-साथ नैतिक मूल्यों को बनाए रखकर समाज में उदाहरण प्रस्तुत करना।
- शिविर और पाठशाला: बच्चों और युवाओं के लिए रोचक धार्मिक शिविरों और पाठशालाओं का आयोजन करना और उनमें भाग लेना।
- भाषा संरक्षण: धार्मिक ग्रंथों की मूल भाषाओं (प्राकृत, संस्कृत) और अपनी मातृभाषा का ज्ञान प्राप्त करना और उसे जीवंत रखना।

अंतिम संदेश:

भगवान महावीर का जीवन और उनका उपदेश प्रकाश स्तंभ के समान हैं। उनके बताए मार्ग पर चलकर हम भी अपने जीवन को सफल और सार्थक बना सकते हैं और जैन शासन की धरोहर को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचा सकते हैं। चलिए, हम सब मिलकर इस कार्य में जुट जाएँ!

MANISH V. SHAH, Subhanpura, Vadodara. Mobile : 94299 26447 (WhatsApp)